ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 12, December 2019

निशस्त्रीकरण: वर्तमान विश्व की आवश्यकता

Dr. Rajesh Kumar Chauhan

Associate Professor, Dept. of Political Science, Govt. College, Bundi, Rajasthan, India

सार

प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नोल्ड टायनबी के अनुसार," आज के युग में यदि हमने युद्ध को समाप्त नहीं किया तो युद्ध हमें समाप्त कर देगा।" यही सबसे बड़ा सत्य हैं। आज संसार में इतने अधिक विनाशक शस्त्र बन चुके हैं कि उनका प्रयोग किया जाए, तो सारी मानव जाति का विनाश हो सकता हैं। इसलिए आज संसार की सबसे बड़ी समस्या निःशस्त्रीकरण ही हैं। इसलिए सातवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तथा उसके बाद राष्ट्रमंडल देशों के शासनाध्यक्षों के सम्मेलन का उद् घाटन करते हुए स्व. प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गाँधी ने समस्त संसार को चेतावनी देते हुए कहा था कि यदि विनाश से बचना चाहते हैं तो हमें निःशस्त्रीकरण के महत्व को प्राथमिकता देनी होगी। नि:शस्त्रीकरण (निशस्त्रीकरण) एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य हथियारों के अस्तित्व और उनकी प्रकृति से उत्पन्न कुछ विशिष्ट खतरों को कम करना हैं। नि:शस्त्रीकरण से हथियारों की सीमा निर्धारित करने व उन पर नियंत्रण करने की ध्वनि निकलती है। नि:शस्त्रीकरण (निशस्त्रीकरण) का लक्ष्य आवश्यकत रूप से नि:शस्त्र कर देना नहीं वरन् इस समय जो हथियार पाये जाते हैं उनके प्रभाव को घटा देना हैं। नि:शस्त्रीकरण कार्यक्रम को कुछ विचारकों द्वारा "शस्त्र नियंत्रण" की संज्ञा दी गई हैं। उनका मत है कि नि:शस्त्रीकरण की जगह यह शब्द ज्यादा उपर्युक्त है, क्योंकि नि:शस्त्रीकरण के अनुसार किसी भी राष्ट्र के पास किसी भी प्रकार के हथियारों का न होना हैं। पूर्ण नि:शस्त्रीकरण वर्तमान में कोई भी राष्ट्र नहीं चाहता हैं क्योंकि आत्मरक्षा, आन्तरिक व्यवस्था तथा उस प्रत्याशित बाह्य आक्रमण से रक्षा के लिये अपने दायित्व पूर्ति हेतु कुछ सैन्य बल तो आवश्यक हैं।

परिचय

निशस्त्रीकरण और शस्त्र को कभी-कभी पर्यायवाची ही मान लिया जाता हैं। लेकिन ऐसा नही हैं, हालांकि दोनों का उद्देश्य शान्ति की प्राप्ति व शस्त्रास्त्रों की कमी करके युद्धों पर रोक या नियंत्रण लगाना हैं, फिर भी इन दोनों में अंतर पाया जाता हैं--

1. निःशस्त्रीकरण का संबंध अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों के अनुसार युद्ध सामग्री तथा सैनिकों की संख्या में कटौती करना हैं जबकि शस्त्र-नियंत्रण का संबंध उन सभी अन्तर्राष्ट्रीय उपायों तथा समझौतों से हैं जो उन शस्त्रों के प्रयोग को सीमित करते हैं तथा नियमित करते हैं जिनको प्रयोग की आज्ञा दी गई हैं।
2. निःशस्त्रीकरण द्वारा विद्यमान शस्त्रों को समाप्त करने या नष्ट करने का प्रयत्न किया जाता हैं जबकि शस्त्र नियंत्रण में भविष्य में शस्त्रों के उत्पादन अथवा प्रयोग के संबंध में सर्वसम्मत तथा वांछित निर्णय सम्मिलित होता हैं।
3. निःशस्त्रीकरण का अभिप्राय सशस्त्र सेनाओं को उनके शस्त्रों तथा साजों-सामान, अड्डों तथा बजट सहित, सीमित करके कटौती करने या बहिष्कार करने से हैं जबकि शस्त्र नियंत्रण का अभिप्राय उन शस्त्र नीति के बहुपक्षीय सहकारी दृष्टिकोण से होता हैं जिसमें शस्त्रों के प्रकार तथा मात्रा, शान्तिकाल या तनावपूर्ण परिस्थितियों के अनुसार सेनाओं में कमी या वृद्धि करने तथा उनकी उपयोगिता से हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध मे अपार जनहानि के बाद विश्व के प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा सताए जा रही हैं। यही अतः नि:शस्त्रीकरण को महत्व दिया जा रहा हैं।[1,2] स्वरूप की दृष्टि निशस्त्रीकरण के प्रकार निम्नलिखित हैं---

1. सामान्य नि:शस्त्रीकरण

इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण में सभी राष्ट्र या कम से कम सभी बड़ी शस्तियाँ सहभागी होती हैं।

2. परिमाणात्मक नि:शस्त्रीकरण

इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण में सभी या अधिकांश प्रकार के हथियारों मे कमी लायी जाती है।

3. परम्परागत नि:शस्त्रीकरण

इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण के अन्तर्गत परम्परागत हथियारों पर रोक या प्रतिबन्ध लगाया जाता है।

4. परमाणु नि:शस्त्रीकरण

इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण के तहत् परमाणु हथियारों को कम या समाप्त किया जाता हैं।

5. गुणात्मक नि:शस्त्रीकरण

इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण में कुछ खास प्रकार के आक्रामक हथियारों को कम या समाप्त किया जाता है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 12, December 2019

6. समग्र नि:शस्त्रीकरण
इस श्रेणी के नि:शस्त्रीकरण मे सभी श्रेणी के सभी प्रकार से हाथियारों को प्रतिबन्धित कर दिया जाता हैं। इसे पूर्ण नि:शस्त्रीकरण कहा जाता हैं। [3,4]

विचार-विमर्श

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व के दो भाग-साम्यवादी, गैर साम्यवादी या पश्चिमी शक्ति मे बँट गया और दोनों के बीच की प्रतिस्पद्धा ने नि:शस्त्रीकरण को आगे बढ़ाने से रोका। दोनों ही पक्ष एक दूसरे से अधिक शक्तिशाली होने, विश्व पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी होने तथा एक दूसरे को पीछे धकेलने के लिय परमाणु शस्त्रों को बढ़ाने की होड़ मे लग गए। महाशक्तियों की इस प्रतिस्पर्धा से भी नि:शस्त्रीकरण की आवश्यकता को बल मिला और अन्तर्राष्ट्रीय समाज में शस्त्रों को समाप्त करने या कम करने के प्रयास में लग गया। नि:शस्त्रीकरण की मुख्य रूप से आवश्यकता विश्व में शान्ति को बनाये रखने और युद्ध को रोकने के लिए आवश्यक हैं। लेकिन प्रश्न यह हैं कि नि:शस्त्रीकरण के लिये प्रयास क्यों कियें जायें? नि:शस्त्रीकरण की आवश्यकता के निम्न कारण स्पष्ट हैं--

1. आर्थिक एवं लोक कल्याणकारी कार्यों के लिये
शस्त्रों की होड़ करते हुए उनके निर्माण पर जो व्यय विभिन्न राष्ट्रों द्वारा किया जा रहा है, यदि वही व्यय समाज के आर्थिक एवं लोक कल्याणकारी कार्यों पर किया जाये तो शायद विश्व मे किसी मनुष्य को भूखा न सोना पड़े और न बिना वस्त्रों के कारण उसे ठण्ड से अपनी जान देना पड़े।

2. विश्व मे शांति की स्थापना के लिये
यह माना जाता है कि नि:शस्त्रीकरण की धारणा विश्व मे शांति स्थापना मे सहायक सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि शस्त्रों का विकास देश को सैनिक दृष्टि देते हैं यह दृष्टि युद्ध की सम्भावना को बढ़ावा देती हैं।

3. आणविक संकट से बचने के लिये
वर्तमान मे यदि आणविक युद्ध से विश्व को सुरक्षित रखना है तो नि:शस्त्रीकरण ही उसका एकमात्र रास्ता है। शस्त्रों पर रोक लगाने या कम करने से यद्यपि आक्रमणों को पूर्णतः समाप्त तो नही किया जा सकता पर उनको सीमित जरूर किया जा सकता हैं।[4,5]

4. नैतिक वातावरण के लिए
नि:शस्त्रीकरण नैतिक वातावरण के लिए भी आवश्यक है। युद्ध के नैतिक अनौचित्य मे विश्वास रखने वाले विचारकों का मत है कि शस्त्र रखने का अर्थ है युध्द की मौन स्वीकृति और यह मौन स्वीकृति युध्द को बल देती है।

5. निरन्तर तनाव का वातावरण
शस्त्रीकरण की बढ़ती हुई दौड़ के कारण सम्पूर्ण विश्व मे निरन्तर आतंक तथा तनाव का वातावरण बना हुआ है। इससे समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान मे बाधा पहुँचती है। शीत युद्ध मे अधिक उग्रता आती है।

6. शस्त्रों का परीक्षण
सर्वोच्च शक्तियां जब शस्त्र बनाती है तो उन शस्त्रों का परीक्षण भी करना चाहती है। यह जानना चाहती है कि जो शस्त्र उन्होंने बनाए है, क्या वास्तव मे वह उतने ही मारक है, जितना उन्हें बनाया गया है। यह जानने के लिए वह संसार के विभिन्न भागों मे छोटे-मोटे युद्ध करती है।

7. शस्त्रीकरण मृत्यु का पैगाम
शस्त्रीकरण के क्षेत्र मे होने वाली आश्चर्यजनक क्रांति ने सम्पूर्ण मानवता को जीवन और मृत्यु के चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है। तकनीकी आविष्कारों ने इतने भयानक शस्त्रों का निर्माण कर दिया है कि कुछ ही मिनटों मे सम्पूर्ण विश्व को नष्ट किया जा सकता है।

8. मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण
मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्पष्ट है कि शस्त्रीकरण देश मे सैनिकीकरण को जन्म देता है। सैनिकों का होना इस बात का घोतक है कि किसी भी प्रकार से युद्ध मे विजय प्राप्त की जाय। इसी की उपस्थिति का अर्थ शक्ति का प्रदर्शन, धमकी, आक्रमण विरोध आदि को प्रोत्साहित करना है। ये इसी कारण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अशान्त वातावरण उत्पन्न करते है।[2,3]

9. उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का अंत करने मे सहायक
साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद ये सभी शक्ति को बढ़ाने के दूसरे रूप है। एक राष्ट्र का शक्ति व राष्ट्रो को बढ़ाना ही युद्ध को जन्म देना है। नि:शस्त्रीकरण मे साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का अंत होता है तथा राष्ट्रों के बीच शांति व्यवस्था की जा सकती है।

10. शस्त्रीकरण से अन्य देशों मे हस्तक्षेप
शस्त्रीकरण दूसरे देशो द्वारा हस्तक्षेप करने का भी मार्ग प्रशस्त करता है। विश्व के छोटे राष्ट्र बड़े राष्ट्रों से शस्त्र तथा हथियारों की टेक्नोलॉजी का आयात करते है। आमतौर से यह देखा गया है कि बड़े राष्ट्र शस्त्र निर्यात और शस्त्र सहायता को राजनीतिक दबाव के साधन के रूप मे प्रयुक्त करते है ताकि परोक्ष रूप से प्राप्तकर्ता देश दाता देशों के चंगुल मे फंसे रहे। यही नही, शस्त्र सहायता

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 12, December 2019

तथा शस्त्र निर्यात के नाम पर बड़ी शक्तियाँ छोटे देशो की अर्थव्यवस्था मे घुसपैठ करती है।[1,2]

11. गलती से युद्ध आरंभ होने का भय

विश्व मे शस्त्रों का अपार भण्डार जमा होने से यह भय तो है ही कि जान-बूझ कर युद्ध आरंभ किया जा सकता है तथा इन शस्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु यह आशंका भी लगातार बनी रहती है कि कहीं भूल से अथवा गलती से युद्ध आरंभ न हो जाए। युद्ध का निर्णय न होने पर भी, किसी गलतफहमी के कारण शस्त्रों का अपार भण्डार मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है।

परिणाम

निशस्त्रीकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएँ निम्नलिखित हैं--

1. परस्पर अविश्वास की भावना

निःशस्त्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा परस्पर अविश्वास की भावना हैं। रूस और अमेरिका दोनों एक-दूसरे से भयभीत हैं और परस्पर अविश्वास करते हैं। दोनों को लगता है कि दूसरा पक्ष उन्हें पूरी तरह नष्ट करने पर तुला हुआ हैं, अतः उसे अधिक तैयारी करनी चाहिए। डॉ. ओम नागपाल के शब्दों में," निःशस्त्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा राजनीतिक ही हैं। तकनीकी बाधा इसके सम्मुख गौण हैं। संसार मे जब तक राजनीतिक तनाव कम नहीं होता, निःशस्त्रीकरण संभव नहीं हैं।"

2. सुरक्षा की गलत धारणा

संसार के अधिकांश बड़े देश भ्रम के शिकार हैं कि उनके पास अपने शत्रु से अधिक और घातक शस्त्र होना ही उनकी सुरक्षा की गारन्टी हैं। इसी धारणा के आधार पर ही ये देश अपनी शस्त्र क्षमता और हथियारों का भण्डार बढ़ाते चले जाते हैं। वे निःशस्त्रीकरण के प्रस्ताव भी ऐसे रखते हैं कि उनकी श्रेष्ठता दूसरे पक्ष पर बनी रहे। प्रो. शूमाँ ने ठीक ही लिखा था," वाशिंग्टन के नीति निर्धारक अपने फार्मूले के प्रति दृढ़ रहे हैं। निःशस्त्रीकरण के सभी अमेरिकी प्रस्तावों के विषय में यह पहले से ही ज्ञात रहता था कि उसे सोवियत रूस ठुकरा देगा। सभी प्रस्ताव रूस को दुविधा में डालने के लिए प्रस्तुत किये जाते थे। सबका पहले ही प्रचार किया जाता था, जो किसी भी समझौते को असंभव बना देते हैं।" यही बात निःशस्त्रीकरण संबंधी रूसी प्रस्तावों के बारे में भी कही जा सकती हैं।

3. आर्थिक कारण

निःशस्त्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा आर्थिक स्वार्थ हैं। अमेरिका और रूस संसार के दो सबसे बड़े शस्त्र उत्पादक व्यापारी है। दुनिया के बाजार में जो शस्त्र बेचे जाते हैं, उनकी लगभग 50 प्रतिशत बिक्री अमेरिका द्वारा की जाती हैं। इसी तरह कुल शस्त्रों की बिक्री की लगभग 28 प्रतिशत रूस द्वारा की जाती हैं। इसके अतिरिक्त शस्त्रों का व्यापार एकाधिकार का व्यापार हैं। इसमें प्रतिस्पर्द्धा बहुत कम और लाभ बहुत अधिक हैं।

4. व्यावहारिक कठिनाइयाँ

निःशस्त्रीकरण के मार्ग में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ भी हैं। किसी समझौते पर तभी हस्तक्षार हो सकते हैं, जबकि दोनों पक्षों को इस बात का आश्वासन हो कि समझौते का पालन होगा। परन्तु आश्वासन के लिए निरीक्षण की वैज्ञानिक व्यवस्था चाहिए। निरीक्षण करने की अनुमति देने पर अन्य सैनिक रहस्य खुलने का भय बना रहता हैं । अतः कई व्यावहारिक कारण भी हैं, जो निःशस्त्रीकरण संबंधी किसी समझौते पर पहुँचने नहीं देते।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 12, December 2019

5. राष्ट्रीय हित

राष्ट्रीय स्वार्थ निशस्त्रीकरण के मार्ग में बहुत बड़ी चुनौती हैं। राष्ट्र सबसे पहले अपने हितों को देखते है और उसके बाद अपनी राष्ट्रीय सीमा से बाहर निकलकर आदर्शों में लिपटी हुई भाषा में अन्तर्राष्ट्रीय बात को धोखा देने का यत्न करते हैं। कोई भी राष्ट्र इसका अपवाद नही हैं। उदाहरणार्थ, भारत ने 1968 की परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किये। भारत चीन से भयभीत हैं और परमाणु अप्रसार संधि को शंका की दृष्टि से देखता हैं।

6. राजनीतिक समस्याएँ

निशस्त्रीकरण राजनीतिक समस्याओं के समाधान पर निर्भर करता हैं, अतः पहले राजनीतिक समस्याओं को हल किया जाये या निःशस्त्रीकरण किया जाये। ये दोनों एक-दूसरे के मार्ग में बाधा डालते हैं। यह सोचा जाता हैं कि शस्त्र झगड़ों का कारण हैं इनको घटाने से अन्तरराष्ट्रीय प्रेम और मैत्री बढ़ेगी, किन्तु यह प्रयत्न एकपक्षीय होगा। होना यह चाहिए कि मनमुटाव, अविश्वास तथा प्रतिद्वन्द्विता को दूर करने के लिए प्रत्येक दिशा में प्रयास किया जाये। वास्तव में, निशस्त्रीकरण की दिशा में ठोस कार्य तब-तक नहीं हो सकता जब तक महाशक्तियों में मौलिक मतभेद बने रहेंगे।[5]

निष्कर्ष

निशस्त्रीकरण पूरी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हिंसा के स्थान पर समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से आपसी सद् विश्वास और सहानुभूति से सुलझाने का ही दूसरा नाम हैं। आज जब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वैचारिक प्रतियोगिता, संकीर्ण राष्ट्वाद, स्वार्थपूर्ण राष्ट्रीय हितों की सीमा में बंधी हैं तो निशस्त्रीकरण करना संभव नही हैं। निःशस्त्रीकरण के लिए एक नए दृष्टिकोण, नये वातावरण, नये विश्वास और नये मानव की आवश्यकता हैं। हाल ही में दुनिया भर में व्यावहारिक रूप से सभी क्षेत्रों में होने वाली भू-राजनीतिक घटनाओं ने वैश्विक सुरक्षा माहौल को और अधिक अस्थिर बना दिया है । अनिश्चितता की भावना को, न केवल गैर-लोकतांत्रिक प्रणालियों के सत्तावादी नेताओं के कार्यों से, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के मजबूत नेताओं के कार्यों से भी सहायता मिलती है। इन राष्ट्रों की ताकतवर सैन्य नीतियों के साथ ही निरंतर बयानबाजी के द्वारा राज्य की सैन्य संपत्ति के उपयोग पर सार्वजनिक भावना को बढ़ावा देने से स्थिति और खराब हो जाती है। सत्तारूढ़ व्यवस्था को नियंत्रण में रखने में सहयोग के लिए एक मजबूत राजनीतिक विपक्ष की आवश्यकता होगी ।इसके अलावा, दो सबसे बड़े परमाणु हथियारों के संग्राहक राज्यों को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अधिक आकर्षक भूमिका निभाने की जरूरत है। सिपरी की वार्षिक पुस्तक,गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए विवश करती है कि वैश्विक निरस्त्रीकरण परियोजना कैसे चल रही है।[5]

संदर्भ

1. http://www.unog.ch/disarmament
2. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 10 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 अप्रैल 2015.
3. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 5 अप्रैल 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 अप्रैल 2015.
4. स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (एसआईपीआरआई-सिपरी) ने कुछ दिन पहले अपनी वार्षिक पुस्तक (ईयर बुक) जारी की, जिसमें अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा में पिछले वर्ष की कुछ चिंताजनक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है। वैश्विक परमाणु शस्त्रागार की अपेक्षित वृद्धि विशेषज्ञों के बीच चिंता का मुख्य कारण थी । रिपोर्ट में दावा किया गया है कि जहां परमाणु शस्त्रागार की पूर्ण संख्या कम हो गई है, वहीं अगले दशक में इसके बढ़ने की उम्मीद है।
5. सिपरी एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय संस्थान है जो, आयुध, हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण में अनुसंधान के लिए समर्पित संस्था है।